

भारतीय ज्ञान प्रणाली उद्गम और विकास

सम्पादक :
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा



भारतीय ज्ञान प्रणाली उद्गम और विकास

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

Books n Books

51/1509, आचमन, वेदविहार,
लोहाखान, अजमेर-305001

प्रकाशक :

पुष्पा शर्मा

Books n Books

51/1509, आचमन, वेदविहार,

लोहाखान, अजमेर-305001

ई-मेल : bnbajmer@gmail.com

मो. 9660111549

संस्करण

प्रथम 2026

ISBN : 978-81-993854-1-2

मूल्य - 400/-

रचना - भारतीय ज्ञान प्रणाली-उद्गम और विकास

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

आवरण - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

मुद्रक

श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

भारतीय ज्ञान परम्परा में संस्कार

अनिता मालिया

सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)

हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

भारतीय परंपरा में संस्कार का विचार अत्यंत गहन और जीवन के हर पहलू से जुड़ा हुआ है। संस्कार केवल बाहरी व्यवहार या दिखावे तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक, आध्यात्मिक और नैतिक विकास का आधार हैं। संस्कार शब्द संस्कृत के 'सम' उपसर्ग और 'कृ' धातु से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'किसी को शुद्ध या परिपूर्ण बनाना।' इसका मतलब है किसी व्यक्ति के जीवन में अच्छाई, अनुशासन और नैतिकता का विकास करना।

संस्कार की प्रक्रिया जन्म के साथ शुरू होती है। जैसे ही बच्चा इस संसार में आता है, उसके अनुभव और पर्यावरण उसके मन पर प्रभाव डालते हैं। ये प्रभाव धीरे-धीरे मन के भीतर स्थायी छाप छोड़ते हैं। इन्हीं छापों को संस्कार कहा जाता है। संस्कार का महत्व इस बात में है कि ये केवल व्यक्ति के वर्तमान आचरण को ही नहीं, बल्कि भविष्य में उसके विचारों, आदतों और चरित्र को भी आकार देते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति पहली बार शराब की दुकान पर जाता है, तो यह उसके जीवन में एक बुरी आदत (कुसंस्कार) का आरंभ होता है। प्रारंभ में वह थोड़ी झिझक और संकोच महसूस करता है, लेकिन बार-बार इस क्रिया को दोहराने से मन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। धीरे-धीरे उस व्यक्ति का मन उस बुरी आदत का आदी हो जाता है, और इसके साथ ही अन्य दुर्गुण भी उसके जीवन में प्रवेश कर जाते हैं।

प्रारंभ में व्यक्ति पर उसकी इच्छा और नियंत्रण होता है; वह चाह कर भी गलत मार्ग नहीं अपनाता। लेकिन समय के साथ, यदि बुरे संस्कार गहरे बैठ जाते हैं, तो व्यक्ति पर उनका अधिकार बढ़ जाता है। यह उसी प्रकार है जैसे कोई कैदी अपने अपराधों के बंदिशों में बंध जाता है। जितना अधिक समय बीतता है, उतनी ही व्यक्ति की मुश्किलें बढ़ती हैं और वह सही मार्ग से दूर होता चला जाता है। इसके विपरीत, अच्छे संस्कार व्यक्ति को अनुशासित, संयमी और गुणी बनाते हैं। ये संस्कार व्यक्ति

को जीवन में सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं, नैतिकता और सत्कार्य की ओर अग्रसर करते हैं।

भारतीय परंपरा में संस्कार की महिमा और उनके निर्माण की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया गया है। संस्कार केवल व्यक्ति के आचार-व्यवहार या मन पर असर डालने वाली छाप नहीं हैं, बल्कि वे उसके चरित्र, सोच और जीवन के मार्ग को गहराई से आकार देते हैं। जैसे किसी साधु महात्मा के दर्शन करने वाला व्यक्ति प्रारंभ में केवल नाम मात्र का प्रभाव अनुभव करता है, लेकिन समय के साथ और बार-बार दर्शन करने से उसके मन में अच्छे गुणों का समावेश होने लगता है। जितना अधिक वह सत्पुरुषों के साथ समय बिताता है, उतना अधिक उसका मन सकारात्मक विचारों और श्रेष्ठ आचार से प्रभावित होता है।

जैसा कि बुरे संस्कार व्यक्ति को दुष्टता की ओर ले जाते हैं, उसी प्रकार अच्छे संस्कार उसे पुण्य और सद्गुण की ओर अग्रसर करते हैं। जिस व्यक्ति ने जीवन भर दूसरों को नुकसान नहीं पहुँचाया और सदा भलाई की दिशा में काम किया है, उसके लिए बुराई करना लगभग असंभव हो जाता है। इसके विपरीत, दुर्जनों के लिए अपराध करना सहज और सहज लगता है। यह स्पष्ट करता है कि संस्कार बनाना मनुष्य के हाथ में है, लेकिन एक बार जब संस्कार स्थापित हो जाते हैं, तो व्यक्ति उनके प्रभाव में आकर उनके अधीन हो जाता है।

कुसंस्कारों का निर्माण ऐसा है जैसे किसी शत्रु के हाथ अपने किले की चाबी दे देना। एक बार चाबी हाथ में आ गई तो शत्रु अपनी इच्छा से किले में प्रवेश कर सकता है। इसके विपरीत, अच्छे संस्कार आरंभ करना बुद्धिमान और निष्ठावान मंत्री की नियुक्ति करने जैसा है, जो जीवन को सुरक्षित और सफल बनाता है। इसलिए आरंभ से ही अच्छे संस्कार विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।

वैदिक धर्म और ऋषियों ने अच्छे संस्कार उत्पन्न करने के लिए तीन प्रमुख विधियाँ बताई हैं: संगति, पाँच महायज्ञ और 16 नैमित्तिक संस्कार। इनमें से संगति का प्रभाव सबसे अधिक है। मनुष्य जिस वातावरण, समाज और लोगों के साथ रहता है, उनका चरित्र और गुण उसके अपने संस्कारों को प्रभावित करता है। जैसे बच्चे अपने माता-पिता, घरवालों और पड़ोसियों की भाषा, व्यवहार और आदतों का अनुकरण करते हैं, उसी प्रकार उनके अच्छे या बुरे आचरण बच्चे के संस्कारों पर स्थायी प्रभाव डालते हैं।

संगति के प्रभाव में शामिल हैं:

1. माता-पिता और परिवार के सदस्य।

2. पड़ोसी और विशेष रूप से बच्चे जिनके साथ खेल-खेल में संसर्ग होता है।
3. पाठशाला के शिक्षक और सहपाठी।
4. समाज या देश के प्रतिष्ठित व्यक्ति जिनके आदर्श और आचरण देखकर बालक अपने लक्ष्य निर्धारित करता है।
5. पुस्तकें और समाचार पत्र, जो अप्रत्यक्ष रूप से विचार और दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं।
6. कहानियाँ और लोक कथाएँ।
7. चित्र और मूर्तियाँ।
8. खेल और मनोरंजन, जो विचार और व्यवहार को आकार देते हैं।

हर व्यक्ति इन आठ स्रोतों से कुछ न कुछ प्रभावित होता है। यदि ये सभी अच्छे हैं, तो व्यक्ति भला बनता है; यदि ये बुरे हैं, तो बुरा बनता है। अक्सर व्यक्ति का जीवन उन स्रोतों के प्रबल प्रभाव के अनुसार ढलता है। इसलिए आरंभ से ही इन सभी संसर्गों को सकारात्मक और नैतिक बनाने का प्रयास करना अत्यंत आवश्यक है।

भारतीय परंपरा में संस्कारों का विस्तृत स्वरूप तीन स्तरों में समझा गया है – संगति, पाँच महायज्ञ और 16 नैमित्तिक संस्कार। इनका उद्देश्य मनुष्य के जीवन को सन्मार्ग पर स्थापित करना और उसे भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक रूप से परिपक्व बनाना है।

दूसरा स्तर – पाँच महायज्ञ :- पाँच महायज्ञ प्रतिदिन किए जाते हैं और इनका उद्देश्य व्यक्ति को समाज, परिवार और ईश्वर के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनाना है। ये हैं:

1. **ईश्वरोपासना या ब्रह्मयज्ञ** – ईश्वर की उपासना और श्रद्धा।
2. **हवन या देवयज्ञ** – अग्नि के माध्यम से ईश्वर को समर्पण।
3. **भूतयज्ञ या बलिवैश्यदेवयज्ञ** – अन्य प्राणियों के लिए भोजन में से अंश निकालकर उन्हें समर्पित करना।
4. **पितृयज्ञ** – माता-पिता की सेवा और आदर करना।
5. **अतिथियज्ञ** – साधु, संयासी और महात्माओं का सम्मान करना।

इन यज्ञों से व्यक्ति को अच्छे संस्कारों को विकसित करने और बुरे प्रभावों को मिटाने में सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए, अगर कोई शिक्षक दुष्ट हो या नेता स्वार्थी, तो पाँच यज्ञ करने वाला व्यक्ति उनके नकारात्मक प्रभाव से बच सकता है और जीवन में सही मार्ग चुन सकता है।

तीसरा स्तर – 16 नैमित्तिक संस्कार :- ये संस्कार जीवन के विशिष्ट अवसरों

पर किए जाते हैं और व्यक्ति को सही मार्ग दिखाने के लिए नियत किए गए हैं। ये संस्कार इस प्रकार हैं:

1. **गर्भाधान संस्कार** – संतानोत्पत्ति से पूर्व ईश्वर और वेद मंत्रों द्वारा प्रतिज्ञा।
2. **पुंसवन संस्कार** – गर्भ के चौथे महीने में।
3. **सीमन्तोन्नयन संस्कार** – गर्भ के सातवें महीने में, शिशु की रक्षा हेतु।
4. **जातकर्म संस्कार** – जन्म के बाद शिशु के सुखद और धर्मात्मा जीवन की कामना।
5. **नामकरण संस्कार** – जन्म के 11वें या 101वें दिन या वर्ष के पश्चात् नामकरण।
6. **निष्क्रमण संस्कार** – शिशु को शुद्ध वायु में ले जाना, शारीरिक विकास के लिए।
7. **अन्नप्राशन संस्कार** – छठे माह में शिशु को अन्न देना।
8. **मुण्डन/चूड़ाकर्म संस्कार** – बालक के बाल काटकर शिखा रखना।
9. **कर्णवेध संस्कार** – कान में बाली पहनाना।
10. **उपनयन/यज्ञोपवीत संस्कार** – जनेऊ धारण, तीन ऋणों (पितृ, ऋषि, देव) का ज्ञान।
11. **वेदारम्भ संस्कार** – गुरु से विद्या अध्ययन प्रारंभ, गायत्री मंत्र का उच्चारण।
12. **समावर्तन संस्कार** – अध्ययन पूरा कर घर लौटना।
13. **विवाह संस्कार** – सामाजिक, शारीरिक और मानसिक परिपक्वता के बाद विवाह।
14. **वानप्रस्थ संस्कार** – 50 वर्ष की आयु में गृहस्थ आश्रम त्यागकर वन में तपस्या और शिक्षण।
15. **संन्यास ग्रहण संस्कार** – पूर्ण वैराग्य और निस्वार्थ कर्म हेतु संन्यास लेना, संसार को मार्गदर्शन देना।
16. **अंत्येष्टि संस्कार** – मृत्यु के पश्चात् शरीर का विधिपूर्वक अंतिम संस्कार।

इन सभी संस्कारों का उद्देश्य जीवन के हर चरण में व्यक्ति को सही मार्ग पर स्थापित करना, अच्छे गुण और सत्कार्यों के लिए प्रेरित करना है। साथ ही, ये संस्कार व्यक्ति को सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से परिपक्व बनाते हैं, ताकि वह अपने कर्तव्यों का पालन कर सके और जीवन में सन्मार्ग का अनुसरण करे।

भारतीय परंपरा में संस्कार का महत्व केवल पुरुषों तक सीमित नहीं है; ये स्त्री पुरुष दोनों के लिए समान रूप से आवश्यक हैं। संस्कारों के माध्यम से मनुष्य

का मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास होता है। बहुत से लोग मानते हैं कि लड़कियों का जनेऊ नहीं होता या उनकी शिक्षा और यज्ञोपवीत आवश्यक नहीं, पर यह गलत धारणा है। वैदिक धर्म में पति और पत्नी दोनों पर तीन ऋणों (पितृ, ऋषि, देव) का समान भार होता है। इसलिए स्त्री को भी पाँच महायज्ञ, वेदाध्ययन और अन्य संस्कार पुरुषों की तरह ही करने चाहिए।

16 नैमित्तिक संस्कारों की विधि महर्षि दयानन्द की 'संस्कार-विधि' और श्री मास्टर आत्माराम की 'संस्कारचन्द्रिका' में विस्तृत रूप से दी गई है। प्रत्येक संस्कार की विधि तीन मुख्य चरणों में होती है:

1. **ईश्वर प्रार्थना और हवन** - जिससे धर्म, श्रद्धा और विश्वास का विकास होता है।
2. **विशेष प्रतिज्ञाएँ** - प्रत्येक संस्कार के उद्देश्य और लाभ का उल्लेख।
3. **विशेष क्रियाएँ** - जैसे बाल काटना, अन्न देना, जनेऊ धारण करना आदि।

धन के दृष्टिकोण से संस्कार करने में बड़ी बाधा नहीं है। संस्कार मुख्यतः धार्मिक और नैतिक क्रियाएँ हैं, न कि धन खर्च का माध्यम। गरीब व्यक्ति भी अपनी क्षमता के अनुसार सरल सामग्री से संस्कार कर सकता है। मुख्य बात यह है कि संस्कार विधिपूर्वक और सही भावना से किए जाएँ। दिखावे या अति-व्यय से कोई लाभ नहीं। उदाहरण स्वरूप, जनेऊ पर अत्यधिक खर्च करना, पर बच्चों के संस्कारों को टालना, मूर्खता के समान है।

आजकल संस्कारों की प्रथा में कई विकृतियाँ आ गई हैं। मुंडन संस्कार के लिए देवी-देवताओं की पूजा या किसी अन्य अनावश्यक रस्मों का पालन, विवाह पर यज्ञोपवीत का विलंब या गलत विधि, कर्णवेध और संन्यास संस्कार की बुरी प्रथा आदि इसके उदाहरण हैं। इन विकृतियों के कारण समाज में अनुचित जीवनशैली, आलस्य, व्यभिचार और मूर्खता फैल रही है।

यदि संस्कारों की सही प्रथा को पुनर्स्थापित किया जाए, तो यह न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि पूरे देश में सुख, अनुशासन और सांस्कृतिक उत्थान ला सकता है। संस्कारों के माध्यम से व्यक्ति धर्मपरायण, सुसंस्कृत और समाजोपयोगी बनता है। इसलिए स्त्री-पुरुष दोनों के लिए संस्कारों का सही और समय पर पालन अत्यंत आवश्यक है।

☆☆☆